93 Ф
943
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

12.02 / 10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 943

8

V/20|1

891.43 P886 S

IMPERIAL RECORD DEPT.
RECEIVED.
30 MAR 1931

जवाहरात के टुकड़े

प्रकाशक व रचयिता—
भगवतप्रसाद 'बनपति'
४६८, साहित्य-कुञ्ज, कटरा, इलाहाबाद।

मुद्रक—
रामअधार यादव,
यूनियन जाब प्रेस, कटरा प्रयाग।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA

प्रथमवार] सर्वाधिकार सुरक्षित [मूल्य -)

पताका

भारत का झंडा फहराए,
हरा सफेद लाल लहराए।

चढ़े रङ्ग दिन प्रति दिन तुझपर,
घर घर बन बन तू फहराए।
दुर्गों पर! क्या न्यायालय पर,
स्कूलों पर! तू लहराए॥
भारत.........

ओ झंडे! तेरी रक्षा में चाहे,
यह गरदन कट जाए।
चाहे भारतीय मुंडों से,
अरब समुद्र भले पट जाए॥
भारत.........

काल सामने भी जो आए
क्या शक्ती तुझको छू पाए।
क्या मजाल मेरे जीते जी,
तू ज़मीन पर भी गिर जाए॥
भारत.........

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई,
सिक्ख, पारसी सब मिल गाएँ।
तैतिस कोटि देसवासी सब,
तेरे सन्मुख शीश नवाएँ॥
भारत.........

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 943
Date 27.12.71
GOVT. OF INDIA

॥ बन्देमातरम् ॥

जवाहरात के टुकड़े

जवाहर

क्या कहूँ, क्या है जवाहर प्रेमियों के वास्ते ?
ज़ख्म है गहरा बहादुर ज़ख्मियों के वास्ते !

योग की सच्ची क्रिया है, योगियों के वास्ते।
त्याग की मूरत स्वयं है, त्यागियों के वास्ते॥

है दवा अक्सीर, हम-त्वय, रोगियों के वास्ते।
लाज की तसवीर है वह, भोगियों के वास्ते॥

गांधी की सृष्टि है वह, बन्दियों के वास्ते।
नव जवानों का मुकुट है, हिन्दियों के वास्ते॥

है निहत्थों की भुजा, बल निर्बलों के वास्ते।
है महा सम्पत्ति वह हम निर्धनों के वास्ते॥

फिर गया वह जेल चौथी मरतबा, किस रास्ते ?
चार सीढ़ी चढ़ गया ऊपर क़ौम के वास्ते !

रह गईं आँखें तड़पती देखने के वास्ते।
ले गया ज़ालिम उसे नैनी भवन के रास्ते॥

छोड़ दे ए बेरहम ! उसको ख़ुदा के वास्ते ।
अन्यथा हम मर मिटेंगे राष्ट्रपति के वास्ते ॥

क़ौम का सरताज है वह इस बरस के वास्ते ।
रख नहीं सकते उसे तुम क़ैद अपने वास्ते ॥

या सबों को बन्द कर, या मार उसके वास्ते ।
या उसे कर दे रिहा अपने भले के वास्ते ॥

हम हैं हिन्दू औ मुसलमाँ एक उसके वास्ते !
चैन हम लेने न देंगे एक पल के घास्ते !

धर्म की है राह सीधी अब हमारे वास्ते ।
मृत्यु है स्वीकार 'भगवत' सत्य पथ के वास्ते ॥

अब्बास तय्यबजी

चले अब्बास तय्यबजी लगी तब हीलने दुनिया ।
लगे पत्थल पिघलने देखकर यह दार्शनिक लुनिया ॥

हुए हैं केश सन उनके, इसी की क्या सफ़ेदी है ?
कि फैली रोशनी है, आत्म-दर्शन की सफ़ेदी है !

अरे, क्यों इस महा-ऋषि को लिये जाता है बन्दी घर ?
न छू इन शूर-बीरों को न अपनी शान हेठी कर ॥

अली भी थे बली कुछ दिन, रहे भारत के बीरों में ।
मगर अब उनकी गिनती हो गई सचमुच अमीरों में ॥

नहीं आते तो मत आओ, अकेले ही लड़ेंगे हम ।
धरम के खेत में जाकर अकेले ही गड़ेंगे हम ॥

अगर वर्षा हुई अच्छी तो निकलेंगे हरे होकर !
मिटाकर अपनी हस्ती को दिखा देंगे मरे जीकर !

चहे मारें चहे पीटें चहे गोली से छिदवायें ।
चहे उड़ जाय धज्जी, पर मुड़ेंगे हम नही मोड़े ॥

देश-प्रेम

देश-प्रेम के पथ के ऊपर, बिछे काँच मत आओ ।
फूलों पर चलने वाले, हे पथिक ! न धोखा खाओ ॥

पग पग पर है घोर वेदना, सोच समझकर आओ ।
आते हो तो स्वागत प्रियवर, सिर आँखों पर आओ ॥

हृदय तौल लो, मन को कस लो, तब तुम क़दम बढ़ाओ ।
प्रथम विमुख हो प्रलोभनों से, तब तुम शीश चढ़ाओ ॥

यहाँ जेल है, यहाँ मृत्यु है,यहाँ कष्ट सहना है ।
संसारी सुख यहाँ नहीं है, यहाँ प्रथक रहना है ॥

दीवानों में नाम लिखाने, को मत समझो खेल ।
समझ बूझ लो, नहीं, अन्त में हो जाओगे फ़ेल ॥

प्रेम-डगर से नहीं लौटना, होता है या फिरना !
आगे ही बढ़ना दिन-प्रति-दिन, क्या उठना क्या गिरना !

दिखाता है रङ्गत गगन कैसे कैसे !

न! अर्जुन, न भीषम, न भीमा दिलावर,
गये मृत्यु के मुँह रतन कैसे कैसे !
दिखाता……

न लव कुश, हक़ीक़त न अभिमन्यु, जीतेन,
गए सूख, देखो, सुमन कैसे कैसे !
दिखाता……

न सोने की लङ्का, न दिल्ली पुरानी,
मिटाया समय ने भवन कैसे कैसे !
दिखाता……

न चिङ्गेज़, औरङ्ग, न नादिर, न सक्क़ा।
मिटे इस जगत से यवन कैसे कैसे ॥
दिखाता……

न परताप राना, न सूरा शिवाजी,
बुझाया पवन ने दिये कैसे कैसे !
दिखाता……

न सुलतान, क़ैसर, न है ज़ार रशिया,
मिटे इस समय के ‘करन’ कैसे कैसे !
दिखाता……

न कोई रहा है, न ‘भगवत’ रहेगा,
बहुत हो चुके हैं दमन ऐसे ऐसे !
दिखाता……

परदा

‘ मेंवों-मेंवों ’ करन लगीं जब पश्चिम की बिलरनियाँ ।
परदामाँद छोड़ तब निकसीं पूरब की सिंहनियाँ ॥

पुरुष-सिंह जब से भारत का भूला निज प्रभुताई ।
हुआ बन्द बन्दीखाने में गीदड़ सदृस छुपाई ॥

सिंह हुआ बलहीन सिंहनी, को डाला परदे में ।
गिरकर कायर ने लक्ष्मी को गाड़ दिया गरदे में ॥

अधःपतन यह देख, सिंहनी फ़ौरन बाहर आई ।
कुपित, क्रान्ति से भरी, बिकल-बेसुध अनमन हो धाई ॥

कुतियों को दुतकार, शृगालों को उसने फटकारा ।
पति के बन्धन तोड़, शत्रु-दल को उसने ललकारा !

सोता था नाहर कायर बन उसको तुरत जगाया ।
सिंह-सिंहनी ने तब मिलकर रिपु दल मार भगाया ॥

* * *

संगम

हिन्दू-मुसलमान-ईसाई, रहिये तीनों मिलकर भाई।
हिन्दू गङ्गा, मुसलिम जमुना, सरस्वती बन छिपें इसाई॥
तीनों का संगम प्रयाग में, हो फिर महा कुम्भ इकजाई।
बहे त्रिवेनी बन प्रयाग में, ये त्रिमूर्ति फिर से हरषाई॥

महेश

सुन्दर नारी सुन्दर देश, होव हाय! है महा कलेश।
बने फिरत साधू धर भेष रावन, ईसा, महामुनेश॥
सीता गई, गया यह देश, काहे मूँदे नयन महेश॥
अन्धकार छाया चहुँ ओर, काहे निकसत नहीं दिनेश॥

क़ैदी

एकादश शताब्दियों से हूँ पड़ा जेल में सड़ता।
अभी तलक हूँ जीवित, पर अब नहीं दीख कुछ पड़ता॥
धीरे धीरे अङ्ग अङ्ग में फैल रही है जड़ता।
सूखा पाँजर नग्न धरा पर सोने से है गड़ता॥
मार पीट कर बरस-दो-बरस और चलेगी दृढ़ता।
मृत्यु अगर होती प्रसन्न, तो काहे को यों कुढ़ता॥

—:*:—

उठो

उठो ! उठो ! हे पतित ! अभागे तुम दुनिया के ।
उठो उठो हे घृणित ! अजागे तुम दुनिया के !
करुण-स्वरों में तीर छुट, रहे हैं लुनिया के !
काँप रही है सृष्टि देख, कौतुक लुनिया के ॥
मानव हृदय समस्त, छेदते वे जाते हैं ।
क्या पृथ्वी आकाश, बेधते वे जाते हैं ॥
हिला दिया पाताल ! खबर ऐसी आई है ।
अद्भुत आत्मिक शक्ति, गांधी ने पाई है ॥
सात समुन्दर पार वार, वे नर करते हैं ।
बिना बधे निष्पाप देश, हित जो मरते हैं ।
उठो ! उठो ! हे बीर ! धर्म, अपना पहिचानो !
उठो ! उठो ! हे बन्धु ! मृत्यु को जीवन जानो ॥
मुट्ठी भर तो हाड़, हृदय कितना विशाल है ।
प्रेम, अहिंसा, देश-भक्ति, तीनों कमाल है ॥
नहीं अकेला चना भाड़ फोड़ा करता है ।
एक साथ दुख का पहाड़ तोड़ा करता है ॥

जीतेन-बिलाप

दम घुट घुट कर है निकल रहा हम भूंखों मरते जाते हैं।
दो चार दिवस के साथी हैं हम अन्तिम व्यथा सुनाते हैं॥
बाहर का भोजन त्याग दिया निज रक्त मास अब खाते हैं।
जीने की है परवाह नहीं मरने में सब सुख पाते हैं॥
जग जाओ ऐ! सोने वालो हम मर कर तुम्हें जगाते हैं।
लो मातृ-भूमि की वेदी पर हम हँस कर प्राण चढ़ाते हैं॥
लो जाते हैं! फिर आते हैं! क्या हमको आप डराते हैं।
हम आवागमन के क़ायल हैं! क्या हमको आप सिखाते हैं!
जीवें जिनको जीना होवे हम तो दुनिया से जाते हैं।
इस जीने से मरना अच्छा हम सब को यही बताते हैं॥
पीवें जिनको पीना होवे हम प्रेम-सुधा बरसाते हैं।
आवें जिनको आना होवे हम मोक्ष मार्ग दरसाते हैं॥
लाखों के चरणों के सेवक लाखों के कन्धे जाते हैं।
जीतेन्द्र हुआ जब एक बीर लाखों जितेन्द्र बन जाते हैं॥
मत रोवो ऐ! रोने वालो हम जाकर जल्दी आते हैं।
परताप, शिवाजी, अकबर को हम संग में अपने लाते हैं॥
धिक्कार है ऐसे जीने पर जीते जीतेन मर जाते हैं।
धिक्कार है ऐसे मर्दों पर जब जीतेन मरदे जाते हैं॥

"राजपाल-बलिदान"

था सभापति बाल-भारत का हमारा राजपाल।
था मदनमोहन अरे! जलियान वाला राजपाल॥
बाल-रवि था बाल-भारत का दुलारा राजपाल!
क्यों ग्रसा हे राहु! तू ने बीर अभिमन्यू अकाल॥
अधखिला था पुष्प! बच्चा सिंह का था राजपाल।
था अभी शिशु क्यों उसे तोड़ा अरे हे ढीठ काल?
डूब कर वह मर गया! मारा गया या राजपाल?
काल उत्तर दे! यही है सामने उसके सवाल॥

मारचिङ्ग साँग

बढ़े चलो! बढ़े चलो! बढ़े चलो! बढ़े चलो!
स्वतन्त्रता के वेदि पर, चढ़े चलो! चढ़े चलो!
बढ़े चलो ....

स्वदेश स्वर्ग जान कर, स्वराज धर्म मान कर!
गिरे चलो! उठे चलो! चले चलो! चले चलो!
बढ़े चलो ....

स्वतन्त्रता कि ठान कर, इसी कोप्रान जान कर।
चहे जलो, चहे गलो, हले चलो! हले चलो!
बढ़े चलो ....

छप गई है ! आर्डर भेजिये !! छप गई है !!!

पावक

कमनीय कविताओं का सर्वांग-सुन्दर-संग्रह

[रचयिता—भगवतप्रसाद "बनपति"]

मूल्य ॥) आठ आना

पुस्तक मिलने का पता :—

भगवतप्रसाद 'बनपति'
४६८ साहित्य-कुञ्ज, कटरा, इलाहाबाद।

मन्त्र

(मौलिक उपन्यास)

[लेखक—श्रीयुत राजेश्वर प्रसाद सिंह]

पुस्तक पढ़ते ही बनती है। भाषा भाव और मनोविज्ञान की ऐसी सुन्दर कहानी कम पढ़ने को मिलती है। एक बार अवश्य पढ़िये। मूल्य १।)

पता:—श्री० नन्दकिशोर जी, ५०६, कटरा, इलाहाबाद।

छप गई ! आर्डर भेजिये !! छप गई !!!

चितवन

कविवर प्रो० 'कुमार' जी की रसीली कविताओं का सचित्र संग्रह। सुन्दर पाँच तिरंगे चित्रों से सुशोभित 'चितवन' को देखकर मन चञ्चल हो उठता है। मूल्य १।) अगले तीन महीने के लिये मूल्य १) कर दिया गया है। शीघ्र आर्डर भेजिये !

पता :— अनन्त बुकडिपो, कटरा, प्रयाग।

मुद्रक—यूनियन जाब प्रेस, कटरा, प्रयाग।